Skill test material, UG Admission-2023-24, Dept. of Acting, FFTV, DLC SUPVA, Rohtak

Receipt No. 700
Dated 20/6/23
Deptt. of FTV PLCSUPVA

1. The candidate can prepare any 2 (1 speech + 1 Poetry) out of following material to perform in the skill test.

For Male candidate

Speech-1

अश्वत्थामा- मैं क्या करूँगा
हाय मैं क्या करूँगा?
वर्तमान में जिसके
मैं हूँ और मेरी प्रतिहिंसा है!
एक अर्द्धसत्य ने युधिष्ठिर के
मेरे भविष्य की हत्या कर डाली है।
किन्तु, नहीं,
जीवित रहूँगा मैं
पहले ही मेरे पक्ष में
नहीं है निर्धारित भविष्य अगर'
तो वह तटस्थ है!
शत्रु है अगर वह तटस्थ है!
(वृद्ध की ओर बढ़ने लगता है।)
आज नहीं बच पाएगा
वह इन भूखे पंजों से
ठहरो! ठहरो!
ओ झूठे भविष्य
वंचक वृद्ध! (दाँत पीसते हुए दौड़ता है। विंग के निकट वृद्ध को दबोच कर

नेपथ्य में घसीट ले जाता है।)
वध, केवल वध, केवल वध
मेरा धर्म है।
(नेपथ्य में गला घोंटने की आवाज, अश्वत्थामा का अट्टाहास। स्टेज पर केवल दो प्रकाश-वृत्त नृत्य करते हैं। कृपाचार्य, कृतवर्मा हाँफते हुए अश्वत्थामा को पकड़ कर स्टेज पर ले जाते हैं।)

नाटक- अंधायुग
नाटककार- धर्मवीर भारती

(11 pages)

Skill Test material to upload in website. Candidate should prepare and perform as per the given instruction. Kindly do the needful.
Urgent.
20.06.23

FC-FFTV
20/6/23

— Director, IT, PLCSUPVA

Speech-2

सिकंदर मिर्ज़ा : फ़ुज़ूल बातें न कीजिए बेगम... हमारे पुस्तैनी घर में आज़ कोई शरणार्थी दनदनाता फिर रहा होगा... ये ज़माना ही कुछ ऐसा है... ज़्यादा शर्म हया और फ़िक्र हमें कहीं का न छोड़ेगी... अपना और आपका ख़्याल न भी करें तो जावेद मियां और तनवीर बेगम के लिए तो यहां पैर जमाने ही पड़ेंगे... शहरे लखनऊ छूटा तो शहरे लाहौर- दोनों में "लाम" तो मुश्तरिक है... दिल से सारे वहम निकाल फेंकिए और इस घर को अपना घर समझकर जा जाइए... बिस्मिल्लाह... आज रात में इशां की नमाज़ के बाद तिलावते कुरान पाक करूंगा...

नाटक- जिन लाहौर नई वेख्या ओ जम्याई नई

नाटककार- असग़र वजाहत

Speech-3

कथावाचक - लौटकर फिर वही ढाक के तीन पात। गाँव के पुश्तैनी पेशे में अब क्या रखा है ? अब तो अब्बा को भी काम नहीं मिलता। यह तो रेडीमेड का ज़माना है। जिसे सिलाना भी होता है वह कस्बे में जाकर सिलवाता है। अब्बा को नए फैशन की चीज़ें सिलनी कहाँ आती हैं ! इधर तो बहुत दिनों से बीमार ही चल रहे हैं। खाट पकड़ ली है। खाँसी बंद होने का नाम नहीं लेती। धीमा-धीमा बुखार भी रहता है। अब किसको दिखाएँ ? दो-एक बार कस्बे में जाकर सुई लगवाई थी लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।...उमर भी तो हो गई है।...एक ही बार में इतना कर्जा-कुआम हो गया और जान के ऐसे लाले पड़े कि अब दुबारा मुंबई जाने की हिम्मत नहीं होती। अब वह कारीगर से खेतिहार मजदूर बन गया है और अपनी और अपने कुनबे की गाड़ी जैसे-तैसे खींच रहा है। उसने पड़ोस के गाँव के एक आदमी से बात की है जो सऊदी में रहता है। लेकिन वीसा वगैरह में बड़ा खर्च है। अल्लाह को जैसा मंजूर होगा।

नाटक - अंतराल

नाटककार- मोहन राकेश

(11 pages)

Skill test material, UG Admission-2023-24, Dept. of Acting, FFTV, DLC SUPVA, Rohtak

For Female candidate

Speech-1

कथावाचक - उसकी गाड़ी देखकर एक आदमी अँगड़ाई लेकर उठा और जल्दी-जल्दी रस्सी खींचकर बैरियर नीचा करने लगा। गाड़ी रुक गई तो वह बैरियर के सिरे को खूँटे से बाँधकर ड्राइवर की खिड़की के पास आया। उससे कुछ गुफ्तगू करने के बाद ड्राइवर ने इधर-उधर खोजकर पाँच रुपये का नोट निकाला जिसे उसने लपककर ले लिया और वापस जाकर बैरियर खोलने लगा। बैरियर ऊपर हो गया तो ड्राइवर आगे बढ़ने के बजाए उससे पर्ची की ज़िद करने लगा। पहले तो उसने ठिठककर ड्राइवर को अजीब निगाह से घूरा, फिर भकुआ-जैसा मुँह बनाकर अलाव तापते दूसरे आदमी की ओर देखने लगा। वह बहुत बेमन से उठकर झोंपड़ी के भीतर गया और काफी देर की खटर-पटर के बाद एक रद्दी-से कागज का पुर्जा लेकर आया जिस पर गलत-सलत वर्तनी में कुछ छपा हुआ था। उसने ड्राइवर को उसे देकर खुद उसपर गाड़ी का नंबर लिख लेने के लिए कहा क्योंकि ठेकेदार बाबू घर गए हुए थे। ड्राइवर ने पुर्जा लेकर खिड़की का शीशा उठाया, गाड़ी स्टार्ट की और रफ्तार बढ़ाते हुए एक भद्दी-सी गाली देकर गेयर बदलने लगा।

कहानी - अंतराल

नाटककार- मोहन राकेश

Speech-2

(11 pages)

अरकादीना:- (त्रिगोरिन से) मेरे पास बैठिए। आज से 10-15 साल पहले यहाँ झील के आस पास गीत और संगीत करीब-करीब हर रात सुनाई देते थे। यहाँ झील के किनारे पर जमींदारों की छः रियासतें हैं। मुझे खूब याद है, यहाँ हर वक्त हँसी, शोर, शिकार और रोमांस ही रोमांस होता था और इन छः बस्तियों के इकलौते हीरो और देवता उस ज़माने में, हमारे... (डोर्न की तरफ इशारा करती है) हमारे यहाँ डॉक्टर एवगेनी सेर्गेयेविच हुआ करते थे। वो अब भी बहुत अच्छे लगते हैं, मगर तब तो जवाब नहीं था उनका। वैसे से अब मुझे अफसोस हो रहा है- मैंने बेवजह ही उस बेचारे लड़के को नाराज़ कर दिया (ज़ोर से) कोस्त्या, बेटे कोस्त्या।

नाटक- सुरगाबी

नाटककार- एंटोन चेखोव

Speech-3

बैनारे : अरे नहीं... क्लास में खड़े हो कर ही तो पढ़ती हूं उन्हें मैं...सब पर नजर रहती है मेरी... कोई शरारत करके तो देखे..... बहुत प्यार करते हैं बच्चे मुझे....इज्जत भी देते हैं...और क्यों ना दें...आखिर मैं भी तो उनके लिए कुछ भी कर सकती हूं...उनकी फेवरेट टीचर हूं मैं... लेकिन इसलिये कुछ लोग जलते हैं मुझसे...मैनेजमेंट ने इंक्वायरी भी बिठाई है..... और वो भी उस गलती के लिए....जिसका मेरी पढाई से कोई संबंध नहीं...

...खून पसीना एक कर दिया मैंने उन बच्चों के लिए। फिर भला वो एक आरोप मेरा क्या बिगाड लेगा..? निकलाना है तो निकल दें...मैंने कभी ही किसी का नुक्सान नहीं किया... अगर किसी का नुक्सान हुआ है तो वो सिर्फ मेरा... वो कौन होते हैं मुझे बताने वाले की मुझे ये करना चाहिए कि मुझे वो करना अरीं...मेरा विश्वास मेरा है...मेरी इच्छाएं मेरी है ... मैं जो चाहूंगी वो करुंगी...हुह....मेरी ये जिंदगी..हुह...

मैं....हुह...

नाटक - खामोश अदलत जारी है

नाटककार- विजय तेंदुलकर

(1 page)

Poetry for Male- Female candidate

कविता-1

आँख पर पट्टी रहे और अक़्ल पर ताला रहे

आँख पर पट्टी रहे और अक़्ल पर ताला रहे
अपने शाह-ए-वक़्त का यूँ मर्तबा आला रहे
देखने को दे उन्हें अल्लाह कंप्यूटर की आँख
सोचने को कोई बाबा बाल्टीवाला रहे
तालिब-ए-शोहरत हैं कैसे भी मिले मिलती रहे
आए दिन अख़बार में प्रतिभूति घोटाला रहे
एक जनसेवक को दुनिया में अदम क्या चाहिए
चार छै चमचे रहें माइक रहे माला रहे

- अदम गोंडवी

(11 Pages)

कविता-2

दुर्गा टॉकीज़ : काम और आराम

दुर्गा टॉकीज़ की ज़मीन से उभरना
हमारे जनपद में सभ्यता का दूसरा चरण था
यह पुनर्जन्म की वापसी थी
बेशुमार बच्चों ने समझिए इसी
दुर्गा टॉकीज़ में जन्म लिया
उनमें अधिकांश जीवित हैं
तंदुरुस्त हैं और मज़े में हैं
यों हमारे जनपद की प्राचीनता मशहूर है
यह ध्रुपद और धमार से भी प्राचीन है
वंदे मातरम से भी प्राचीन है
हिंदी जाति और उसकी कलाओं से भी प्राचीन है
यह हिंदुस्तान से भी प्राचीन है
पहले यहाँ जानवर घूमा करते थे
आदमी तो यहाँ बाद में आए
और उन्होंने चलाना शुरू किया इतिहास वगैरा का चक्कर
इस मिट्टी को ज़रा कुरेदिए, इसमें आपको
हमारी महान जनता की पसलियों के टुकड़े
और सभ्यता के चिथड़े मिलेंगे
यहाँ आना और जाना लगा रहा
मरना और मारना चलता रहा

(11 पृष्ठ)

कितने मरे–अकाल से, महामारी से, वबाल से,
तलवार से, तोप और बंदूक़ से, ख़ुद अपने ही कमाल से,
कायरता से, नष्ट हो जाने की शुद्ध प्रतिभा से
बहुत-सी दास्तानें हैं, लेकिन कोई भी उनमें पूरी नहीं
महान काम–जिनमें हरेक अधूरा रहा
और नाम जिनकी कोई गिनती नहीं, किस-किसकी याद करें
और मंज़िलें और इरादे जो तब से अब तक चले आते हैं
लड़ाइयाँ देखीं देखा लड़ाइयों का ख़ात्मा
अंत में हक़ीकत कुछ और ही पाई गई
अंत में ज़ुल्म, ख़ूँरेज़ी, ग़ारतगरी, दिलेरी,
आज़ादी, क़ुरबानी, आन-बान, शहादत, बेहतरी
और दूसरी फुटकर हिमाक़तों पर
मनोरंजन की जीत हुई।

- असद ज़ैदी

कविता-3

दुःख और मिठाई

माँ से पहली बार मार खाने के बाद,
वह सुबक रही थी।
उसने चीनी खाई,
उसे अच्छा लगा।
सहेलियों ने उसकी उपेक्षा की,
वह रो रही थी।
उसने टॉफ़ी खाई,
उसे सुकून मिला।
उसका दिल टूटा,
उसे घुटन हो रही थी।
उसने चॉकलेट खाई,
उसे हल्का लगा।
दुःखों के सामने,
छोटी-मोटी बुद्धि, चालाकी
और हास्यबोध किसी काम नहीं आता।
दुःखों को सहने में इनकी भूमिका संदिग्ध थी
जबकि आलू और गुलाबजामुन खाकर
तुरंत राहत मिलती थी।

(11 Pages)

निर्धन जनता का शोषण है
कह कर आप हँसे
लोकतंत्र का अंतिम क्षण है
कह कर आप हँसे
सबके सब हैं भ्रष्टाचारी
कह कर आप हँसे
चारों ओर बड़ी लाचारी
कह कर आप हँसे
कितने आप सुरक्षित होंगे
मैं सोचने लगा
सहसा मुझे अकेला पा कर
फिर से आप हँसे"

रघुवीर सहाय
हो गई है पीर पर्वत-सी

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
सारी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

दुष्यंत कुमार

टुकड़े-टुकड़े हो बिखर चुकी मर्यादा
उसको दोनों ही पक्षों ने तोड़ा है
पाण्डव ने कुछ कम कौरव ने कुछ ज्यादा
यह रक्तपात अब कब समाप्त होना है
यह अजब युद्ध है नहीं किसी की भी जय
दोनों पक्षों को खोना ही खोना है
अंधों से शोभित था युग का सिंहासन
दोनों ही पक्षों में विवेक ही हारा
दोनों ही पक्षों में जीता अन्धापन
भय का अन्धापन, ममता का अन्धापन
अधिकारों का अन्धापन जीत गया
जो कुछ सुन्दर था, शुभ था, कोमलतम था
वह हार गया....द्वापर युग बीत गया
(पर्दा उठने लगता है)
यह महायुद्ध के अंतिम दिन की संध्या

है छाई चारों ओर उदासी गहरी

कौरव के महलों का सूना गलियारा

हैं घूम रहे केवल दो बूढ़े प्रहरी

नाटक अंधा युग

नाटककार धर्मवीर भारती

संजय -

जीवित हूँ।
आज जब कोसों तक फैली हुई धरती को
पाट दिया अर्जुन ने
भूलुंठित कौरव-कबन्धों से,
शेष नहीं रहा एक भी
जीवित कौरव-वीर
सात्यकि ने मेरे भी वध को उठाया अस्त्र;
अच्छा था
मैं भी
यदि आज नहीं बचता शेष,
किन्तु कहा व्यास ने 'मरेगा नहीं
संजय अवध्य है'
कैसा यह शाप मुझे व्यास ने दिया है
अनजाने में
हर संकट, युद्ध, महानाश, प्रलय, विप्लव के बावजूद
शेष बचोगे तुम संजय
सत्य कहने को
अन्धों से
किन्तु कैसे कहूँगा हाय
सात्यकि के उठे हुए अस्त्र के
चमकदार ठंडे लोहे के स्पर्श में
मृत्यु को इतने निकट पाना
मेरे लिए यह
बिल्कुल ही नया अनुभव था।
जैसे तेज वाण किसी
कोमल मृणाल को
ऊपर से नीचे तक चीर जाए
चरम त्रास के उस बेहद गहरे क्षण में
कोई मेरी सारी अनुभूतियों को चीर गया
कैसे दे पाऊँगा मैं सम्पूर्ण सत्य
उन्हें विकृत अनुभूति से?

नाटक अंधा युग
नाटककार धर्मवीर भारती

(11 Pages)

इस तरह
इससे पहले,
कि दुःख उसे घेरते,
वह कुछ न कुछ खाने की इच्छा से घिर जाती।
बस एक दिल था,
बोझिल नाड़ियों से ख़ून सींचता-सींचता,
अब हायतौबा करने लगा था।
रक्तचाप की गुपचुप भाषा में,
दिल के नए दुःख सुना रहा था।

- मोनिका कुमार

Films for Discussion (Group/Individual)

Candidate may select two films , one from each group for discussion.

Group - A

1. The Great Dictator - directed by Charlie Chaplin
2. Pyaasa- directed by Guru Dutt
3. Pather Panchali - directed by Satyajit Ray

Group-B

1. Bombay Mirror – directed by Shlok Sharma
2. Kavi- directed by Gregg Helvey
3. Interior Café Night- directed by Adhiraj Bose